REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2022

रीवा जिले की कोल जनजाति में सृजनात्मक परिवर्तन और शिक्षा का अध्ययन

डॉ. नीलेश प्रताप सिंह
प्राचार्य , स्व. जाहिद खान महाविद्यालय गुढ़, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

रीवा जिले की कोल जनजाति में सृजनात्मक परिवर्तन के पीछे एक महत्वपूर्ण कारक शिक्षा का स्तर ज्ञात हुआ है। यद्यपि सृजनात्मक परिवर्तन में कई कारकों की प्रभावी भूमिका जैसे परिवहन के साधन, संचार व्यवस्था, मशीनीकृत कृषि पद्धति, इन्टरनेट, औद्योगीकरण, नगरीकरण आदि की पाई गई है। किन्तु सर्वाधिक प्रभावी कारक शिक्षा के स्तर में सुधार, शैक्षणिक संस्थान तथा सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयास हैं। ज्ञात हो कि देश एवं प्रदेश की अन्य जनजातियों की भांति अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख कोल जनजाति में जागरुकता की कमी, अंधविश्वास, रीति–रिवाज, खान–पान, मादक पदार्थों का सेवन आदि के चलते शत–प्रतिशत शिक्षा के स्तर में सुधार नहीं हो पाया है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव जिले की जनजाति के सामाजिक पारिस्थितिकी, आर्थिक स्तर पर दृष्टिगोचर हो रहा है जबकि केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा इनके सुधार एवं सृजनात्मक परिवर्तन के लिए अनेक कल्याणकारी योजनायें एवं नीतियों का क्रियान्वयन किया गया।

मुख्य शब्द – रीवा, कोल, जनजाति एवं सृजनात्मक परिवर्तन।

प्रस्तावना –

किसी भी समाज में सृजनात्मक परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, चाहे वह कोई भी समाज अथवा जाति, जनजाति, धर्म व सम्प्रदाय से सम्बन्धित होकर समाज में गतिशील पायी जाती है। समाज के लोगों में गतिशीलता सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन व बदलाव को दर्शाती है। समाज में गतिशीलता एक जटिल प्रघटना भी है, यह बदलाव अथवा परिवर्तन पीढ़ी दर पीढ़ी हो सकती है, यह समाज में व्यक्ति या समूह दोनों अथवा दोनों में से किसी एक की प्रस्थिति में हो सकता है।

जनजातीय समाज में गतिशीलता की सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक जीवन, आर्थिक स्तर, राजनैतिक भागीदारी, सांस्कृतिक बदलाव आदि समाज में हो रहे है। परिवर्तन तथा सामाजिक स्तरीकरण से कदापि पृथक कर उसे नहीं समझा जा सकता है। परिवर्तन की स्थिति, वस्तु या आचरण, व्यवहार, आर्थिक क्रियाकलाप, व्यवसाय में भिन्नता, नवीनता तथा उसमें हो रहे नवीन बदलाव व परिवर्तन को प्रदर्शित करते हैं। समाज में परिवर्तन भी एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, शिक्षा, संचार, परिवहन, नगरीकरण व औद्योगीकीकरण के विकास व उनके बढ़ते प्रभाव के चलते अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक जीवन में द्रुतगति से गतिशीलता आई है। सम्पूर्ण जिले की जनजाति समाज के कार्य व्यवहार, व्यवसाय, शिक्षा के स्तर, राजनैतिक भागीदारी, व्यापारिक एवं वाणिज्यिक स्तर के साथ सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है, इसीलिए

जनजाति समाज में तेजी से साामाजिक गतिशीलता आई है। भूमिकाओं से युक्त अनेक वर्गों में विभाजित हो गया। इस प्रकार समाज स्तरीकृत हो गया। रॉवर्ट एन. भाशि का कथन है कि तकनीकी दृष्टि से सामाजिक स्तरीकरण अवस्था जड़ होती है, क्योंकि यह एक निर्धारित समय पर सामाजिक संरचना को व्यक्त करती है। जाति अवस्था ने वर्ण अवस्था को समाप्त कर अपना स्थान बनाया। आज जाति आधारित संस्तरण बीते समय की बात हो गया है तथा अब वर्गों तक अवस्था पर जोर हैं जहाँ वह स्तरीकरण हो वहां व्यक्तियों और समूह को अपनी प्रस्थिति, पद और प्रतिष्ठा परिवर्तित करने के अवसर नहीं होते हैं। इसके विपरीत वर्गात्मक अवस्था खुली रहती है। वर्ग में परिवर्तन के साथ व्यक्ति के कार्य, प्रस्थिति पद और प्रतिष्ठा में भी परिवर्तन हो जाता है। जिले के कोल जनजाति में पारिस्थितिकी व्यवस्था में सृजनात्मक परिवर्तन की स्थिति दृष्टिगोचर है।

विश्लेषण –

रीवा जिला जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र मध्य प्रदेश के पूर्वांचल जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र का अभिन्न अंग है, जिसमें स्थानीय प्राकृतिक पर्यावरण एवं सांस्कृतिक भू–दृश्यावली की अमिट छाप दिखाई पड़ती है। भौतिक संरचना एवं प्राकृतिक वातावरण के अनुसार रीवा जिला के जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र या आवास को मुख्य रूप से चार भागों में विभक्त किया जा सकता है –

(1) दक्षिणी जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र
(2) उत्तरी जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र
(3) पश्चिमी जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र
(4) पूर्वी जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र।

(1) दक्षिणी जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र – इसके अन्तर्गत रीवा जिला का दक्षिणी अंचल सम्मिलित है। इसमें मऊगंज एवं हनुमना विकासखण्ड का भू अंचल सम्मिलित है, जिसमें जनजाति बहुतायत में आवासित हैं। जिसमें कोल, गोड़, पाव जनजातियां पायी जाती हैं। इनका मुख्य उद्यम कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित कार्य तथा मजदूरी लकड़ी काटना तथा जंगली वनस्पतियों का संग्रह एवं ईंटा भट्ठा आदि में कार्य करते हैं।

(2) उत्तरी कोल जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र – इसमें जवा, त्योंथर विकासखण्ड के अन्तर्गत घना जंगली पर्वती पहाड़ी अंचल है, जो उत्तरप्रदेश की परिसीमा से संलग्न है। कोल, माझी आदि जनजातियां पायी जाती हैं, जिनका भरण पोषण जंगली वनस्पतियों पर आश्रित है।

(3) पश्चिमी जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र – इस भू–अंचल के अन्तर्गत सेमरिया तहसील एवं सिरमौर विकासखण्ड के आदिवासी बहुसंख्यक कोल, माझी आदि पाये जाते हैं। ये अधिकांशतः कृषक हैं तथा कृषि कार्य में संलग्न हैं।

(4) पूर्वी जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र – इस भूभाग के अन्तर्गत नईगढ़ी एवं गंगेव आदि विकासखण्ड हैं। यहां कोल, माझी आदि जातियां पायी जाती हैं। यह कृषि कार्य में संलग्न है। स्थानीय पत्थर तोड़ने, मिट्टी डालने तथा कटाई, निराई एवं जंगली वस्तुओं के संग्रह कार्य में संलग्न हैं।

जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र में परिवर्तन –

वातावरण के सृजनात्मक परिवर्तन का प्रभाव रीवा जिला के जनजातियों में उनके कार्यात्मक शैली एवं व्यावहारिक जीवन में अनेक रूप में परिलक्षित है, जिसमें कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन निम्न प्रकार हैं –

(1) जनजाति कृषि कार्य में परिवर्तन
(2) जनजाति उद्यम एवं अर्थ व्यवस्था में परिवर्तन।
(3) जनजाति सामाजिक जीवन एवं स्वास्थ्य मान्यताओं में परिवर्तन।
(4) जनजाति आवास व्यवस्था में परिवर्तन।
(5) जनजाति रहन–सहन एवं वेष–भूषा में परिवर्तन।
(6) जनजाति आहार एवं पोषण व्यवस्था में परिवर्तन।

(1) जनजाति कृषि कार्य में परिवर्तन – वर्तमान पर्यावरण के प्रभाव से जनजाति भी अछूती नहीं है। बदलते परिवेश के अनुकूल जनजाति के क्षेत्र में पर्यावरण पारिस्थितिकी का प्रभाव पड़ा है, जिससे जनजाति की पारिस्थितिकी में विषय विन्यास प्रतिरूप दिखायी पड़ता है, जिन्हें मुख्य रूप से तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है –

(अ) स्थानीय आवास या निवास क्षेत्र – जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र में परिवर्तन अधिकांशतः अपने पूर्व क्षेत्र को छोड़कर आगम्य स्थानों की ओर प्रयास कर अपना स्थान बना लिया। बहुसंख्यक जनजातियां तालाब, सड़क एवं शासकीय बंजर भूमि में अपना आवास बना लिया है। जवा विकासखण्ड के सुदूर अंचल डभौरा क्षेत्र में बहुसंख्यक कोल जनजातियों का संकेन्द्रण पाया जाता है। इस क्षेत्र के अनेक गांव कोल जनजाति बाहुल्य जनसंख्या के नाम से जाने जाते हैं। इन ग्रामों में मुख्य रूप से हड़हाई, लोहगढ़, कोल्हुआ, गेंदुरहा, छतैनी, बड़ाच, सांगी आदि प्रमुख हैं।

(ब) पोषक क्षेत्र में परिवर्तन – आजादी के पश्चात वन भूमि जो जनजातियों के पोषक का साधन थी, उसके पहले यहाँ आदिवासी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने निवास क्षेत्र के अन्तर्गत ही करते थे। किन्तु विकास के कारण आवास क्षेत्र के अन्तर्गत पोषण की पूर्ति नहीं हो पाती, जिनसे जनजाति को अपने निवास क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र में निर्भर रहना पड़ता है। आज यहाँ की जनजाति संख्या विभिन्न शहरों की ओर पलायन कर रही है। जहाँ की कारखाने तथा दुकानों में काम मिल सके। नवयुवक वर्ग विशेष रूप से शहरों को पलायन कर रहे हैं। गाँव के कुछ लोग ठण्डी के दिनों में ईंटा पाथने के लिए समीपी नगर में चले जाते हैं, जहाँ जनजातियाँ अपने पोषण क्षेत्र की आवश्यकता की प्रतिपूर्ति करने के लिए विवश हैं।

(स) बहु–आयामी क्षेत्र में परिर्वन – रीवा जिला में आजादी के पश्चात बहु संख्यक आदिवासी किसानों की भूमि ले ली गयी है। परियोजनार्थ सड़क, भवन निर्माण के कारण अधिकांश प्राकृतिक सम्पदा नष्ट हो गयी है। वर्तमान में तेन्दू पत्ता, चिरौंजी, बहुराइन की पत्ती, हर्रा, बहेरा, महुआ का फल फूल आदि का संग्रह व्यापारिक पैमाने पर किया जाने लगा है। इस तरह 1980 के पूर्व जो जनजाति स्थानीय क्षेत्र थे वे वर्तमान में बहुआयामी क्षेत्र में परिवर्तित हो गये हैं। जनजातियों की आबादी में बिखराव पैदा हो गया है। ये मजदूरी के लिए इधर–उधर भटकते हैं।

जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र में परिवर्तन एवं गतिविधियों के मध्य अन्तर्गत सम्बन्ध निम्न सारणी से स्पष्ट है –

सारणी क्रमांक– 1

जनजाति पारिस्थितिकी क्षेत्र में परिवर्तन एवं गतिविधियाँ एवं सृजनात्मक परिवर्तन

क्र.	पारिस्थितिकी क्षेत्र के रूप	परिवर्तन का रूप	गतिविधियाँ (प्रभाव कारक तत्व)
1.	स्थानीय अथवा निवास क्षेत्र	स्थानीय आवास एवं भौतिक वातावरण में परिवर्तन उपरोक्त के अतिरिक्त संस्कृति एवं तकनीकी में परिवर्तन	सड़क निर्माण, वनों का दोहन, जनसंख्या का दबाव, कृषि में यंत्रकीय प्रयोग, उत्खनन
2.	पोषक क्षेत्र	भौतिक वातावरण के रूप में कोल जनजाति में अन्य से सभ्यता किन्तु पोषक में विभिन्नता के कार्य का अलग–अलग ढंग	निर्माण उद्योग, व्यापार दूर संचार, शैक्षणिक गतिविधियाँ
3.	बहुआयामी क्षेत्र	विविध सांस्कृतिक संमिश्रण उद्यम एवं अर्थ उत्पादन में प्रतिस्पर्धा	संसाधन दोहन हेतु अन्य जातियाँ घुसपैठ कर जनजातियों को उनकी क्षेत्र से बाहर कर दे रही हैं।

स्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर, वर्ष 2022–23

जनजाति कृषि कार्य में परिवर्तन एवं कार्य का स्वरूप के मध्य जो बिन्दु, सर्वथा उभर कर प्रगट हुए हैं, वे इस प्रकार हैं –

(1) कृषि कार्य वंशानुक्रम से हटकर स्वार्थ परक हो गया है।
(2) कृषि में व्यक्तिगत यांत्रिकी शुरुआत होने के फलस्वरूप समाजवाद टूटकर साम्प्रदायिक परिवर्तित होता जा रहा है।
(3) व्यक्तिगत हित एवं भूमि संरक्षण के प्रति झुकाव क्रमशः बढ़ रहा है।

इस प्रकार जिले में आधुनिक कृषि पद्धति के चलते फसल उत्पादन प्रतिरूप में तेजी से परिवर्तन हुआ है। यहां के कोल जनजातियां कृषि कार्य हेतु आधुनिक कृषि उपकरणों तथा उन्नत बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशक दवाओं का प्रयोग फसल उत्पादन में वृद्धि हेतु करते हैं। अतः कोल जनजाति के द्वारा फसल उत्पादन के प्रतिरूप एवं उत्पादन में परिवर्तन की स्थिति को निम्नानुसार सारणी के द्वारा स्पष्ट किया गया है –

सारणी क्रमांक–2
जिला रीवा कोल जनजाति एवं फसल उत्पादन में परिवर्तन

क्रमांक	खरीफ फसल	रबी फसल
1.	जून से खेतों की जुताई	खेतों को सींच करके जोतना
2.	हल व दूसरे औजारों की देखरेख व मरम्मत	खाद्य डालना
3.	हल बैल तथा देवता की पूजा	बेबाई
4.	जून के प्रथम वर्षा के बाद बोबाई	गोड़ायी
5.	जुलाई व अगस्त में पौधों का प्रतिरोपण	देखभाल
6.	15 दिनों बाद हाथ से गोड़ाई	क्टाई
7.	फसल की रक्षा	सफाई एवं अन्य संग्रह
8.	पानी की आवश्यक सतह कायम रखना	
9.	फसल की कटाई एवं गहाई	
10.	धान की बोनी	
11.	टोसाना	
12.	पूजा करना	
13.	नवम्बर तक कटाई व संग्रह करना	

स्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर, वर्ष 2022–23

जिले में कोल जनजाति की अर्थव्यवस्था एवं पारिस्थितिकी एवं सृजनात्मक परिवर्तन में आधुनिक कृषि पद्धति की प्रभावी भूमिका पाई गई है। कृषि कार्य में बदलाव के साथ अनेक आर्थिक क्रियायें जैसे प्राथमिक उत्पादन, द्वितीयक उत्पादन तथा तृतीय उत्पादन के स्वरूप में वृद्धि हुई है, अतः व्यवसाय के अनुसार आर्थिक क्रियाकलापों में हुये परिवर्तन को निम्नानुसार सारणी द्वारा स्पष्ट किया गया है –

सारणी क्रमांक–3
कोल जनजाति की अर्थव्यवस्था एवं पारिस्थितिकी परिवर्तन

क्रमांक	कार्य का आधार	उद्यम एवं अर्थव्यवस्था में परिवर्तन
1.	कृषि विस्तार, घरेलू उद्योग एवं हरत कौशल, राजस्व एवं वन के नये कानून	जनजाति की आर्थिक गतिविधियों पर प्रभाव, उद्यम में स्थायित्व कृषि सिंचित कृषि का प्रचलन, पशु पालन गाय, बैल, दूध का व्यवसाय, मुर्गी पालन का प्रोत्साहन मिल रहा ळें
2.	शासकीय उपक्रम	जंगली वस्तु का संग्रह जैसे तेन्दू पत्ता महुराइन की छाल एवं पत्ता, चार चिरौंजी, लकड़ी आदि के संग्रह के प्रति उत्साह, महुआ का फूल, तेन्दू पत्ता संग्रह आदि।
3.	शिक्षा, उद्यम जनजाति शिक्षा	समाज के अन्य वर्गों के साथ संपर्क के फलस्वरूप एवं अर्थव्यवस्था

		में जागरण, जनजाति शिक्षा के कारण उद्यम में लाभ एवं धन की प्राप्ति का प्रचलन शुरू हो रहा है।
4.	परम्परागत मूल्यों में शिथिलता	धर्म निरपेक्ष मूल्यों की ओर क्रमशः उन्मुख हो रहे हैं।

जनजाति उद्यम एवं अर्थव्यवस्था में परिवर्तन एवं कार्य के आधार के मध्य जो अर्न्ससम्बन्ध सन्निहित हैं, उसमें निम्न बिन्दु विशेष रूप से उभरे हैं –

1. जनजाति उद्यम में क्रमशः स्थायित्व परिलक्षित होने लगा है जैसे – स्थायी कृषि, पशु पालन, लकड़ी काटना, मुर्गी पालन आदि।
2. जनजातियों में शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण उद्यम में लाभ एवं धन प्राप्ति का प्रचलन शुरू हो गया है।
3. शासकीय संस्थाओं के सहयोग के कारण इनमें वन उत्पादक वस्तुओं का संग्रह, तेन्दू पत्ता, महुराइन का पत्ता, चार–चिरौंजी, महुआ, फल, फूल संग्रह आदि बढ़ रहा है।
4. उद्यम एवं अर्थ उत्पादन में आधुनिक यंत्रों का प्रयोग बढ़ रहा है।
5. कृषि में सिंचाई का प्रयोग बढ़ रहा है।
6. उद्योग एवं परिवहन व्यवस्था के प्रति झुकाव बढ़ रहा है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः जिले की कोल जनजाति में क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान पारिस्थितिक में सृजनात्मक परिवर्तन की स्थिति ज्ञात हुई है। रीवा जिले के कोल अनुसूचित जनजातियों को सीमांकित करते हुए जिले में कोल जनजातियों को समग्र मानकर रीवा जिले के (कुल 09) नौ विकास खण्डों के प्रत्येक विकास खण्ड के 05–05 कोल आदिवासी बाहुल्य ग्रामों से 10–10 कोल अनुसूचित जनजाति के परिवारों के मुखिया का चयन साक्षात्कार हेतु किया गया। साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों एवं सूचनाओं से जिले की कोल जनजाति में द्रुतगति से पारिस्थितिकी एवं सृजनात्मक परिवर्तन की स्थिति उभरकर प्रकाश में आयी है।

संदर्भ –

- मिश्रा, बी.एल. : कोल जनजाति समाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण, शोध प्रबंध, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, 1951।
- सिंह, रामपाल : जनजातीय समुदाय पर औद्योगीकरण का प्रभाव, पीएच.डी. शोध प्रबंध, 1993 ।
- सिंह, सुमन्त : सीधी जिले के विकास केन्द्र, अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध, 1984, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा।
- भारत में पर्यटन उद्योग का विकास, राष्ट्रीय भूगोल शोध संगोष्ठी 27–28 फरवरी, 1997, शासकीय महाविद्यालय, सीधी।
- भारत में ग्रामीण विकास समस्यायें एवं ब्यूह रचना, शोध पत्रिका, अर्थशास्त्र विभाग, सीधी, 1997 ।
- पर्यावरण एवं जनजातियां–अस्तित्व के लिये समीकरण, शोध पत्रिका, शासकीय महाविद्यालय, अम्बिकापुर, 1995 ।
- प्रकृति एवं प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण प्रबंधन एवं रख–रखाव, शोध पत्रिका, राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी, 1996, शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, रीवा।
- शंकर कमला : रीवा संभाग के आदिवासी क्षेत्रों का भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध, 1988, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा।
- डॉ. शर्मा, ब्रह्मदेव (1980), आदिवासी विकास एवं सैद्धांतिक विवेचना, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ 18. आकस्मिकता योजना नियम 1995, आदिम जाति एवं अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, भोपाल, केन्द्रीय मुद्रणालय, 1996 ।